213hi05

5

भारत पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव : आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक (1757-1857)

18वी सदी में संसार में एक बड़ी संख्या में महत्वपूर्ण घटनाएँ घटी। एक ऐसी ही घटना औद्योगिक क्रांति है जो इंग्लैंड में हुई। वह धीरे-धीरे यूरोप के अन्य देशों में भी फैल गई। आपने इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति के बारे में तथा समुद्र और व्यापार मार्गों की खोज के बारे में पढ़ा होगा। 1498 में वास्को दी गामा नामक एक पूर्तगाली ने भारत आने का समुद्री मार्ग खोजा। परिणाम स्वरूप अंग्रेज, फ्रेंच, पूर्तगाली और डच व्यापार के लिए भारत आये। इन्होंने इसे मिशनरी गतिविधियों को भारत में फैलाने के लिए भी इस्तेमाल किया। क्या आप जानते हैं कि भारतीय इतिहास में आधुनिक काल की शुरूआत भारत से इन यूरोपीय शक्तियों के आने से हुई। आप इस पाठ में ब्रिट्रिश लोगों के भारत में आने और उसके आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में पड़े प्रभाव के बारे में भी पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप सक्षम हो जायेंगे:

- ब्रिट्रिश लोगों के भारत में आने के कारणों पर चर्चा करने में;
- अंग्रेजों द्वारा भारत को उपनिवेश बनाने के विभिन्न तरीकों को पहचानने में;
- ब्रिट्रिश शासन के दौरान पड़े आर्थिक प्रभावों का अध्ययन करने में;
- भारतीय समाज और संस्कृति पर ब्रिट्रिश प्रभाव का वर्णन करने में; और
- 1857 के विद्रोह से पहले उनके शासन के तहत विरोध आंदोलनों के कारण को पहचानने में।

5.1 ब्रिटिश के भारत आने के कारण

यूरोपीय तथा ब्रिट्रिश व्यापारों आरंभ में भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आये थे। ब्रिट्रिश में हुई औद्योगिक क्रान्ति ने वहा के कारखानों के लिए कच्चे माल की मांग बढ़ा दी थी। साथ-साथ

वे अपना तैयार माल भी भारतीय बाजारों में बेचना चाहते थे। भारत ने ब्रिटेन की सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए उसे एक ऐसा ही आधार उपलब्ध करवाया। 18सदी में भारत में भी आंतरिक सत्ता के लिए संघर्ष की स्थिति थी और मुगल साम्राज्य की शक्ति भी कम ही रही थी। अतः ब्रिट्रिश अधिकारियों के पास भारतीय क्षेत्र पर अपनी पकड़ स्थापित करने का अवसर था। उन्होंने कई युद्धों के माध्यम से, थोपी हुई संधियों से, अनुबन्धों से और पूरे देश में विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों के साथ गठजोड़ किया। अपनी नई प्रशासनिक और आर्थिक नीतियों की मदद से सम्पूर्ण देश पर अपना नियन्त्रण दृढ़ बनाया। उनकी भू-राजस्व नीतियों ने किसानों और उनसे राजस्व में बड़ी रकम प्राप्त की। उन्होंने कृषि की विभिन्न फसलों के व्यवसायीकरण पर बल दिया तथा ब्रिटेन के उद्योगों के लिए कच्चा माल की आपूर्ति सुनिश्चित की। मजबूत राजनीतिक नियंत्रण के साथ ब्रिट्रिश भारत में व्यापार पर एकाधिकार करने में सक्षम हो गए। उन्होंने अपने विदेशी प्रतिद्वंदियों को व्यापार में हरा दिया और उनका कोई प्रतिद्विन्दी नहीं रहा। उन्होंने सभी प्रकार के कच्चामाल की बिक्री पर एकाधिकार कर लिया और उसे कम कीमत पर खरीदा जबकि भारतीय बुनकर इसे अत्यधिक मूल्य पर खदीदते थे। अपने स्वयं के उद्योग की रक्षा के लिए ब्रिटेन ने भारतीय माल पर भारी आयात कर लगाया। देश में परिवहन और संचार प्रणाली को सुधारने के लिए विभिन्न निर्देश दिए गए ताकि खेतों से बंदरगाहों तक कच्चा माल और बंदरगाहों से बाजारों तक तैयार माल की आवाजाही आसान हो सके। साथ-साथ अंग्रेजी शिक्षा की भी शुरूआत की गई जो शिक्षित भारतीयों का एक ऐसा वर्ग तैयार करे जो अंग्रेजों को देश पर शासन करने और अपनी राजनीतिक सत्ता सुदृढ़ करने में मदद करे। इन सभी उपायों ने अंग्रेजों को भारत में अपना शासन स्थापित करने , इसे सुदृढ़ करने और जारी रखने में मदद की।

चित्र 5.1 ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा प्रयोग की गई मुद्रा

5.2 भारत में उपनिवेशीकरण के तरीके

यूरोप के नक्शे को देखो; आपको उस पर कई बड़े और छोटे राज्य मिल जाएंगे, जब यूरोप में औद्योगिक क्रांति शुरू हुई इन छोटे राज्यों के पास अपने उद्योगों के लिए कच्चा माल और तैयार माल के लिए बाजार नहीं था। अब इन देशों ने एशिया और अफ्रीका में बाजार को तलाश करना शुरू कर दिया। इंग्लैंड भारत के साथ व्यापार नियंत्रित करने में सफल रहा और 1600 में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की। इस कंपनी को ब्रिट्रिश सरकार द्वारा समर्थन मिला। इसकी मदद से इंग्लैंड भारतीय उपमहाद्वीप में अपनी क्षेत्रीय सीमाओं का विस्तार करने में सफल हो गया। पहली फैक्ट्री 1613 में सूरत में स्थापित की गई 1615 में सर थामस रो को मुगल सम्राट जहांगीर से आगरा, अहमदाबाद तथा भड़ूच में फैक्ट्री खोलने की अनुमति मिल गई। उनकी महत्वपूर्ण बस्ती दक्षिणी तट पर मद्रास थी, जहां उन्होंने एक किले बंद फैक्ट्री का निर्माण किया जो सेंट जॉर्ज किला कहा जाता है। कम्पनी ने यह पहली मालिकाना जीत प्राप्त की थी। भारत की धरती पर धीरे-धीरे कंपनी अपने व्यापार का विस्तार करने लगी। उस समय तक कंपनी भारत में अच्छी तरह से स्थापित हो गई और वह भारत से अन्य प्रतिद्विदें यूरोपीय शक्तियों का उन्मूलन करने में सफल रही। अब उन्होंने शासकों के रानीतिक मामलों में भी हस्तक्षेप शुरू कर दिया।

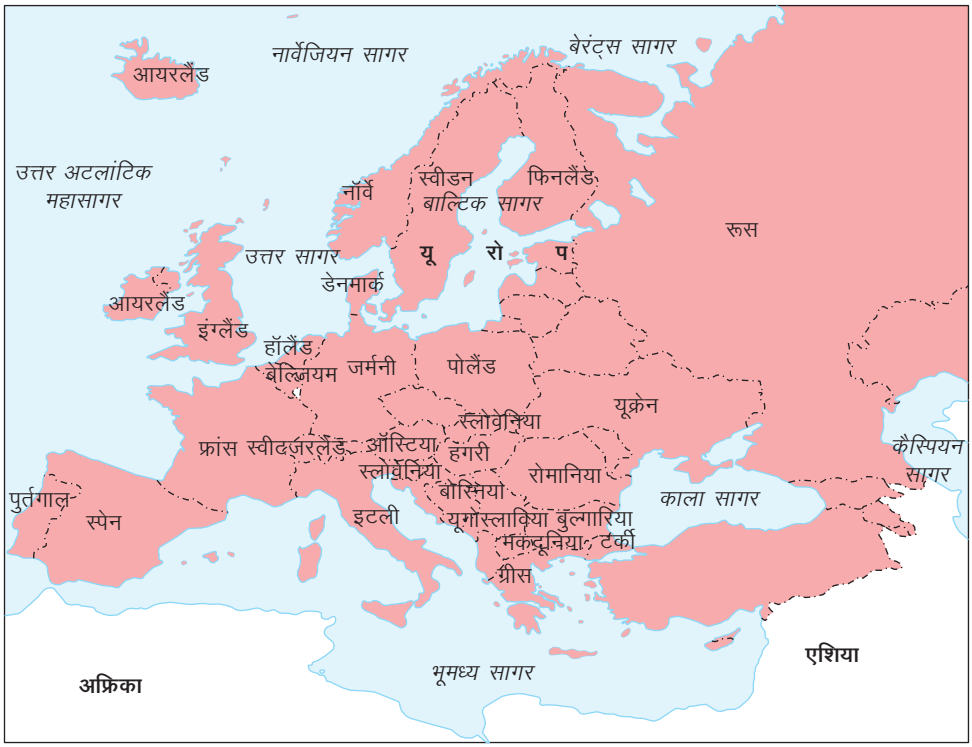

चित्र 5.2 आज के यूरोप का मानचित्र

क्या आप जानते हैं

1696 में कंपनी ने बंगाल में तीन गांवों को एक शहर में विकसित किया और इसे कोलकाता नाम दिया। उन्होंने इस शहर के चारों ओर एक किले का निर्माण किया जो फोर्ट विलियम के नाम से जाना जाता है।

19वी शताब्दी के भारत के नक्शे को देखो; आपने क्या देखा? आप कई बड़े तथा छोटे स्वतन्त्र राज्यों को देखेंगें। इन राज्यों के अपने स्वयं के शासक, अर्थव्यवस्था, भाषा और संस्कृति थी। इन राज्यों में लागातार एक दूसरे के साथ युद्ध होते रहते थे। यह आश्चर्य की बात नहीं हैं कि वे यूरोपीय शक्तियों के विशेष रूप से ब्रिट्रिश के लिए एक आसान शिकार बन गए। वह प्लासी (1757) और बक्सर (1764) की लड़ाई थी। जहाँ अंग्रेजों को भारत में शासन स्थापित करने में सफलता प्राप्त हुई। इन लड़ाइयों के माध्यम से ब्रिट्रिश राजनीतिक सत्ता के एक लंबे युग की शुरूआत हुई। प्लासी की लड़ाई बंगाल में अंग्रेजों ने जीती थी उन्होंने मीरजाफर को बंगाल का नवाब बना दिया और बदले में एक विशाल राशि तथा 24 परगना के क्षेत्र प्राप्त किए। लेकिन मीरजाफर उन्हें और अधिक भुगतान करने में सक्षम नहीं था। इसके परिणामस्वरूप मीर कासिम जो एक मजबूत शासक था उसे नबाव बना दिया। मीर कासिम अधिक पैसा या नियंत्रण के लिए अंग्रेजों की मांगों को पूरा करने के लिए तैयर नहीं था, अतः उसे हटा दिया और मीरजाफर को पुनः नवाब बनाया दिया गया। मीर कासिम ने अवध के नवाब, शिराज-उद् दौला और मुगल

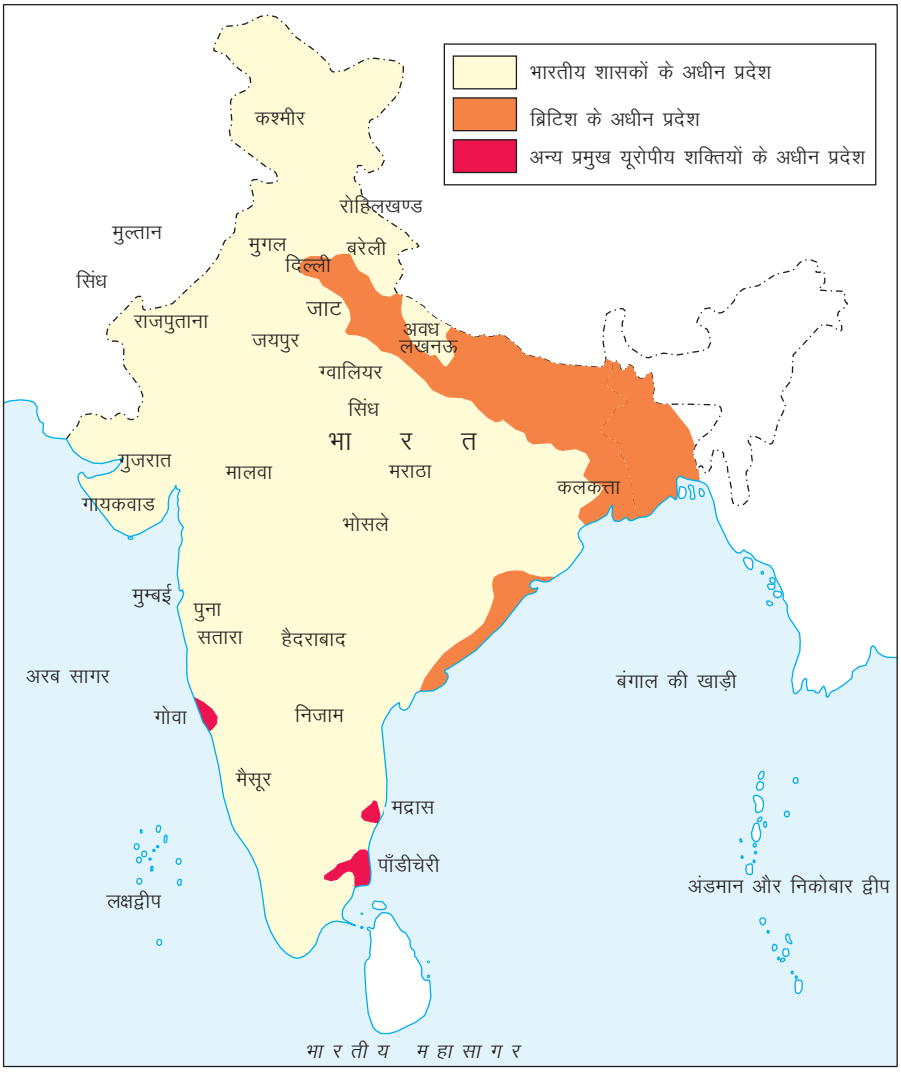

चित्र 5.3 19वीं सदी के भारत का मानचित्र

बादशाह आलम द्वितीय के साथ मिलकर अंग्रजों के खिलाफ 22 अक्टूबर 1764 में बक्सर नामक जगह पर लड़ाई लड़ी उसकी हार निर्णयात्मक रही।

यद्यपि अंग्रेजों ने सफलतापूर्वक बंगाल पर नियंत्रण प्राप्त किया, फिर भी सम्पूर्ण भारत में ब्रिट्रिश शासन स्थापित करना एक सरल काम नहीं था। बड़ी संख्या में क्षेत्रीय शक्तियों ने अंग्रेजों के सीमा विस्तार के प्रयासों का विरोध करने की कोशिश की। अब हम विभिन्न भारतीय राज्यों के विरूद्ध अंग्रेजों द्वारा किए गए युद्धों के बारे में पढ़ेंगे।

(i) आंग्ल-मैसूर युद्ध

हैदरअली और उसके पुत्र टीपू सुल्तान के सक्षम नेतृत्व में मैसूर एक शक्तिशाली राज्य के रूप में 18वीं सदी के उत्तरार्ध में उभरा। अंग्रेजों और मैसूर के बीच चार युद्ध हुए और अंत में चौथे आंग्ल मैसूर युद्ध 1799 में वीरतापूर्ण हार और टीपू सुल्तान की मृत्यु से मैसूर और अंग्रेजों के बीच संघर्ष का एक गौरवशाली अध्याय समाप्त हो गया। कनारा, कोयम्बटॅर और श्रीरंगापटनम जैसे बड़े बंदरगाह अंग्रेजों द्वारा सुरक्षित अधिकार में ले लिए गए।

चित्र 5.4 टीपू सुल्तान

(ii) एंग्लो-मराठा युद्ध

अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में मराठे पश्चिमी और मध्य भारत में एक और दुर्जेय शक्ति बन गए थे। लेकिन आपस में सत्ता के लिए संघर्ष के कारण अंग्रेजों को उनके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अवसर मिला। सहायक संधि (जिसके बारे में आप 5.2.1 में पढ़ेंगे) अंग्रेजों और मराठों के बीच कई युद्धों का कारण बनी।

तीसरा एंग्लो मराठा युद्ध (1817-1819) उन दोनों के बीच अन्तिम युद्ध था। अंग्रेजों ने पेशवा को हराकर गद्दी और उसके सभी प्रदेशों पर कब्जा कर लिया। पेशवा की पेंशन बन्द कर दी और उसे उत्तर प्रदेश में कानपुर के निकट बिठुर भेज दिया।

(iii) आंग्ल सिख युद्ध

उत्तर -पश्चिम भारत में, सक्षम नेता महाराजा रणजीत सिंह (1792-18ए) को नेतृत्व में सिख एक प्रभावी राजनीतिक और सैन्य शक्ति बन ब्रिट्रिश सत्ता के विरूद्ध एक खतेरे के रूप में उभरे।

अतः ब्रिट्रिश सिखों को नियंत्रण करना चाहते थे। रंजीत सिंह की 1839 में मृत्यु के बाद, पंजाब में अराजकता फैल गई। अंग्रेजों ने इस का लाभ लिया और प्रथम आंग्ल-सिख 1845) युद्ध छेड़ दिया जो सिखों की हार के साथ समाप्त हो गया। द्वितीय आंग्ल-सिख 1849 युद्ध में, अंग्रेजों ने सिखों को गुजरात (चिनाव नदी के पास के शहर) की लड़ाई में हरा दिया। सिखो के प्रमुख ने आत्मसमर्पण कर दिया और पंजाब पर डलहौजी द्वारा कब्जा कर लिया गया। महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र महाराजा दलीप सिंह को पेंशन देकर इंग्लैंड भेज दिया गया।

चित्र 5.5 महाराजा रंजीत सिंह

5.2.1 अन्य विजय अधिग्रहण और अनुबंधों की प्रणाली

1761 में मराठों के विरूद्ध पानीपत की तीसरी लड़ाई पहले से ही भारत में अंग्रेजों की सफलता के लिए मंच प्रदान कर चुकी थी जल्द ही कई और अधिक देशी राज्य ब्रिट्रिश नियंत्रण के अंतर्गत आ गए। यह सब एक प्रणाली द्वारा किया गया जिसे विलय की नीति और सहायक संधि कहा जाता है इसके द्वारा स्वतत्र राज्यों को एक बड़ी संख्या मो ब्रिट्रिश साम्राज्य के कब्जे में लिया गया। कहा गया है कि ये राज्य ब्रिट्रिश संरक्षण का आनन्द ले रहे थे लेकिन उनके शासक सिंहासन के लिए एक प्राकृतिक वारिस छोड़े बिना मर गए, उनके गोद लिए बेटे की संपत्ति या पेंशन अंग्रेजो ने ज्यादा समय तक नहीं दी इस तरह डलहौजी ने सतारा मराठा राज्य (1848), सबलपुर (1850) उदयपुर (1852), नागपुर (1853), झांसी (1854) और अवध (1856) पर कब्जा कर लिया। सहायक संधि में जो भारतीय राज्य अंग्रेजो के अधीन थे उनकी सेनाओं को निलंबित कर दिया गया और उन्हें ब्रिट्रिश सैनिकों का बनाये रखने के लिए मजबूर किया। उनके विदेशी कार्य पर अपना नियंत्रण दिया और उनके किसी भी प्रयोजन आर्थिक या राजनीति के लिए अन्य विदेशी राज्यों के साथ गठजोड़ करने का अधिकार छीन लिया गया। बदले में उन्हें अपने प्रतिद्विदियों से अंग्रेजों द्वारा संरक्षण दिया गया।

अधिग्रहण की नीति ने न केवल भारतीय शासकों को भी प्रभावित किया बल्कि परंपरागत विद्वानों और पुरोहित वर्ग जो शासकों, मुखियों, अमीरों और जमींदारों पर निर्भर थे से अपना संरक्षण खो दिया और इस प्रकार वे निर्धन हो गए।

19बी शताब्दी के मध्य तक कोई भी भारतीय शक्ति अंग्रेजों का विरोध या उन्हें चुनौती देने लायक नहीं रही। असम, अराकान उत्तर-पूवी क्षेत्र, नेपाल और वर्मा के कुछ भागों पर (1818 से 1826) से पहले ही कब्जा कर लिया गया। अंग्रेजों ने 1843 में सिंध पर कब्जा कर लिया।

चित्र 5.6 झांसी की रानी लक्ष्मीबाई

क्रियाकलाप 5.1

कल्पना कीजिए कि आप 15 वर्ष के हैं और 19वीं सदी के भारत की रियासत के शासक के भतीजे और भतीजी है। आपके चाचा की अपनी खुद की कोई भी औलाद नहीं है और वे आप को सिंहासन का वारिस बना रहे हैं। यदि आपके आपने राज्य में अंग्रेजों की विजय की नीति का सिद्धांत अगर लगाया जाए तो आप क्या कदम उठायेंगे अगर आपके चाचा के बाद आपको वे उत्तराधिकारी बनने की अनुमति नहीं दे तो?

पाठगत प्रश्न 5.1

1. सही उत्तर पर निशान लगाएँ:-

   (क) भारत में ब्रिट्रिश इस रूप में आये थे?

   (i) विजेता (ii) यात्री (iii) आक्रमणकारी (iv) व्यापारी

(ख) मीर जाफर नवाब थे?

(i) मैसूर (ii) पंजाब के (iii) बंगाल के (iv) चीन के

2. ब्रिट्रिश भारत क्यों आए? कम से कम दो कारण दीजिए

3. अंग्रेजों ने देशी राज्यों के अधिग्रहण के लिए कौन से दो मुख्य तरीके अपनाए?

5.3 आर्थिक प्रभाव

औद्योगिक क्रांति ने अंग्रेजी व्यापारियों की प्रशिया, अफ्रीका और अमेरिका के देशों से प्रचूर मात्रा में पूंजी इकट्ठा करने में मदद की थी। अब वे इस धन का उपयोग उद्योग लगाने व भारत में व्यापार करने में लगाना चाहते थे। आज जो हम वस्तुओं का मशीनों से बड़ी मात्रा में उत्पादन देखते हैं, की शुरूआत औद्योगिक क्रांति के माध्यम से शुरू हुई थी, जो 18वीं सदी के अंत में और 19वीं सदी के आरंभ में इंग्लैंड में हुई। इससे तैयार माल के उत्पादन में व्यापक बढ़ोतरी हुई। ईस्ट इंडिया कंपनी को औद्योगिक और वित्तीय आधार फैलाने में मदद मिली। इस समय इंग्लैंड में उत्पादकों का एक ऐसा वर्ग था जो व्यापार की तुलना में वस्तुओं के उत्पादन से अधिक कमाता था। यह वर्ग भारत से कच्चे माल के आयात तथा तैयार माल के भारत निर्यात में अधिक रूचि रखता था। 1793 तथा 1813 के मध्य ब्रिट्रिश निर्माताओं ने कम्पनी के विरूद्ध एक अभियान चलाया जिससे उसका व्यापार पर से एकाधिकार समाप्त हो जाए। परिणामस्वरूप उन्होंने भारतीय व्यापार पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के एकाधिकार का उन्मूलन करने में सफलता प्राप्त कर ली। इससे भारत औद्योगिक इंगलैण्ड का आर्थिक उपनिवेश बन गया। आइए अब हम भारतीय उद्योग एवं व्यापार पर पड़े प्रभाव के विषय में ज्यादा पढ़े।

5.3.1 वस्त्र उद्योग और व्यापार

पहले भारतीय हथकरघा उत्पादों का यूरोप में एक बड़ा बाजार था। भारतीय वस्त्र जैसे रेशम, कपास, लिनन और ऊनी माल के लिए पहले से ही एशिया और अफ्रीका में बाजार था। इंग्लैण्ड में औद्योगिकरण के आने के साथ वहां वस्त्र उद्योग महत्वपूर्ण बन गया। अब ब्रिटेन और भारत के बीच कपड़ा व्यापार की दिशा पलट गई। भारतीय बाजार में अंग्रेजी कारखानों से मशीन के बने कपड़े बड़े पैमाने पर आयात होने लगे। इंग्लैण्ड में मशीनों से निर्मित उत्पादों का बड़ी मात्रा में आयात भारत के उद्योगों के लिए खतरा बन गया क्योंकि ब्रिट्रिश माल को सस्ती कीमत पर बेचा जाता था।

अंग्रेज भारत में अपने उत्पाद कम मूल्यों पर बेचने में सफल रहे क्योंकि विदेशी वस्तुओं का भारत में बिना कोई शुल्क दिये आने दिया जाता था। वहीं दूसरी ओर भारतीय हस्तशिल्प पर भारी कर लगाए जाते थे, जब उन्हें निर्यात किया जाता था। इसके अतिरिक्त उद्योगपतियों के दवाब में ब्रिटिश सरकार ने एक सुरक्षात्मक टैरिफ भारतीय वस्त्रों पर लगाया। इसके कारण कुछ वर्षों के भीतर ही भारत कच्चे कपास और कपड़े का आयातक बन गया।

इस बदलाव का भारतीय हथकरघा और बुनाई उद्योग पर बड़ा प्रभाव हुआ जो उसके पतन का कारण बना। इसने बुनकरों के एक बड़े समुदाय को बेरोजगार बनाया। वे शहर छोड़कर चले गए और खेतिहर मजदूरों के रूप में गांव में भूमि पर काम करने लगे इसने ग्रामीण अर्थव्यवस्था और

आजीविका पर दबाव बढ़ा दिया। इस प्रक्रिया में भारतीय हथकरघा उद्योग को आसमान प्रतियोगिता का सामना करना पड़ा बाद में इसे भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं ने अनऔद्योगीकरण के रूप में करार दिया।

क्या आप जानते हैं

ड्यूटी खरीदे या बेचे जाने वाले माल पर जो 'कर' सरकार को अदा किया जाता है, ड्यूटी कहते हैं।

टैक्स सरकार द्वारा आय, सम्पत्ति और बिक्री पर लगाया गया कर।

आयात कर या शुल्क अंकित होता है जो आयात या निर्यात पर लगाया जाता है।

अंग्रेजों का मुख्य उद्देश्य भारत को ब्रिट्रिश माल के उपभोक्ता रूप में बदलना था। इसके परिणामस्वरूप भारतीय कपड़ा, धातु का काम, कांच, कागज आदि उद्योग खत्म हो गए। 1813 तक भारतीय हस्तशिल्प ने अपने विदेशी तथा घरेलू बाजर को खो दिया। भारतीय माल ब्रिट्रिश कारखानों में निर्मित उत्पादों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता था, जो मशीनों के द्वारा बनाया जाता था। बिट्रेन न एकाधिकार करके युद्ध और औपनिवेशीकरण के माध्यम से बाजार पर कब्जा कर लिया। वे भारतीय शासकों, व्यापारियों, जमींदार और यहाँ तक की आम लोगों से रुपया उगाहने लगे। यह स्पष्ट था कि अंग्रेजों की आर्थिक नीतियाँ ईस्ट इंडिया कंपनी और बाद में ब्रिट्रिश साम्राज्य के हितों के लिए थी।

क्रियाकलाप 5.2

बहरीयार गरेरिया खानबदोश की केस स्टडी

"बिहार गया जिले में भेड़ के 75 परिवारों के समुदाय ने धन की कमी के कारण कंबल बुनना बंद कर दिया" ऐसा संडे ट्रिब्यून स्पैक्ट्रम नामक अखबार में 11 मार्च 2012 को छपा।

एक बुनकर कहते हैं, "हम बाजार में बेचे जा रहे कम्बलों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकते।" एक अन्य का कहना है, "हम गांवों में अपने उत्पादों को बेचने के लिए मजबूर हैं क्योंकि शहरी बाजार तक हमारी पहुंच नहीं है।"

ब्रिटिश भारत के दौरान और वर्तमान भारत में बुनकरों की स्थिति की तुलना करें। यह एक जैसी है या अलग? आप इस स्थिति में सुधार के लिए क्या सुझाव देना चाहोगे?

5.3.2 भूमि राजस्व नीति और भूमि निपटान

प्राचीन काल से लोगों के लिए आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि था इसलिए सारे संसार में 'भूमि कर' सभी सम्राटों के लिए राजस्व का मुख्य स्रोत था। 18वीं सदी में भारतीय लोगों का मुख्य

व्यवसाय कृषि था। ब्रिट्रिश शासन के दौरान भूमि राजस्व बढ़ता गया। इसके लिए कई कारण थे। शुरू में ब्रिट्रिश भारत के साथ व्यापार करने के लिए आये थे। धीरे-धीरे वे भारत के विशाल क्षेत्र को जीत लेना चाहते थे जिसके लिए उन्हे धन की बहुत जरूरत थी। उन्हें व्यापार एवं कंपनी की परियोजनाओं तथा प्रशासन को चलाने के लिए रुपयों की जरूरत थी। ब्रिट्रिश भू-राजस्व व्यवस्था किसानों के कठिनाईयों का कारण बने। वे अपनी नीतियों और युद्ध अभियानों के लिए किसानों से धन निकलवाते थे। प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीका से भी राजस्व इकट्ठा किया जाता था। इससे प्रभावित लोग अपनी दैनिक जरूरतों को भी पूरा नहीं कर सकते थे क्योंकि उन्हें जमीन मालिकों और उनके लगान अधिकारियों को लगान कर देना पड़ता था। स्थानीय प्रशासन ग्रामीण गरीबों को राहत और प्राकृतिक न्याय प्रदान करने में विफल रहा।

लार्ड कोर्नवालिस ने 1793, में बंगाल और बिहार में स्थायी बंदोबस्त की शुरूआत की। इसमें जमींदारों को सरकारी खजाने में पैसे की एक निश्चित राशि जमा करनी थी। बदले में वे भूमि के वंशानुगत मालिकों के रूप में पहचाने गये। इससे जमींदार भूमि का मालिक बन गया। उसे राजस्व को निश्चित समय की अवधि में कम्पनी को भुगतान करना होता थी। जिससे ब्रिट्रिश आर्थिक रूप से सुरक्षित बन गए। अब वे जानते थे कि राज्य में कितना राजस्व आ रहा था। जमींदार को भी पता था कि कितना राजस्व भुगतान किया जाना था। स्वयं के लिए अधिशेष राजस्व प्राप्त करने के लिए किसानों से उत्पादन बढ़ाने के लिए कहा। परन्तु, अगर जमींदार निश्चित समय पर राजस्व को भुगतान करने में विफल होता तो उसे जमीन को दूसरे जमींदार को बेच दिया जाता था। इससे अंग्रजों को लाभ हुआ। लाभ के रूप में जमींदारों का एक नया वर्ग उभरा जो उनके राजनीति सहयोगी बन गया। वे जरूरत के समय में ब्रिट्रिश को समर्थन देते और उनके और किसानों के बीच एक (बफर) मध्यस्थ का काम करते। वास्तव में इस वर्ग ने स्वतंत्रता आंदोलन के खिलाफ अंग्रेजों की मदद की।

1822 में अंग्रेजों ने उत्तर-पश्चिमी प्रांत, पंजाब, गंगा घाटी और मध्य भारत के कुछ हिस्सों में महलबारी बंदोवस्त शुरू किया। इस के आधार एक महल या संपत्ति का उत्पाद होता था - जो शायद एक गाँव या गाँवों के एक समूह के बराबर होता था। महल के सभी मालिक संयुक्त रूप से सरकार द्वारा मूल्यांकन राजस्व की राशि के भुगतान के लिए जिम्मेदार थे। दुर्भाग्य से यह किसानों के लिए लाभकारी नहीं था क्योंकि राजस्व की मांग बहुत अधिक थी।

रैयतवारी बंदोवस्त 19वीं सदी के शुरूआत में बम्बई और मद्रास प्रेसीडेंसी के कई भागों में शुरू किया गया था। यहां भू-राजस्व रैयत या किसानों पर सीधे लगाया गया था, किसान स्वयं वास्तव में जमीन पर काम करता था। और जमीन के मालिक के रूप में पहचाना गया वह राजस्व का भुगतान करने में सक्षम था। लेकिन उच्च राजस्व की मांग के कारण उसका शोषण जारी रहा।

5.3.3 कृषि का व्यवसायीकरण

भारत में ब्रिट्रिश नीतियों का एक अन्य प्रमुख आर्थिक प्रभाव चाय, कॉफी, इंडिगो, अफीम, कपास, जूट, गन्ना एवं तिलहन जैसी वाणिज्यिक फसलों के परिचय से पड़ा। विभिन्न वाणिज्यिक फसलों को विभिन्न प्रकार के अलग उद्देश्यों के साथ प्रस्तुत किया गया। भारतीय अफीम को चीनी, चाय

व्यापार संतुलन के लिए इस्तेमाल किया गया। जो बाद में ब्रिटेन के पक्ष में हो गया। अफीम का बाजार सख्ती से अंग्रेज व्यापारियों द्वारा नियंत्रित किया गया जिसमें भारतीय उत्पादकों के लिए लाभ की ज्यादा गुंजाइश नहीं छोड़ी। भारतीयों को नील उत्पादन करने और इसे अंग्रेजों की तय शर्तों पर बेचने के लिए मजबूर किया गया। नील को इंग्लैण्ड भेज दिया जाता था और ब्रिट्रिश कपड़े की रंगाई के रूप में इस्तेमाल किया। सभी किसानों को नील को अपनी जमीन के 3/20 भाग पर उगाने के लिए मजबूर किया गया दुर्भाग्य से नील की खेती कुछ वर्षों के लिए भूमि को बंजर बना देती थी। इससे किसान इसे उगाना नहीं चाहते थे। चाय बागानों का स्वामित्व अक्सर बदल जाता था। इन बागानों पर मजदूर कठिनाइयों के अंदर काम करते थे।

कृषि के व्यवसायीकरण और स्वामित्व के हस्तांतरण की गति से देश में भूमिहीन मजदूरों की संख्या बढ़ गई। इससे एक बड़ी संख्या में सौदागर, व्यापारियों और दलालों ने इस स्थिति में किसानों का शोषण किया। किसान अब फसल कटाई के दौरान अपनी खेती को बेचने के लिए उनपर निर्भर थे क्योंकि किसानों अब वाणिज्यिक फसल उगाते थे। जिससे खाद्यान उत्पादन नीचे चला गया। अतः कम अनाज से अकाल की स्थिति बन गई। इसके बारे में विस्तार से आप आने वाले अध्याय में पढ़ेंगे। हमारे देश से धन की भारी राशि विभिन्न आर्थिक नीतियों की वजह से ब्रिटेन भेजी गई। अतिरिक्त वित्तीय बोझ सैन्य और नागरिक कर्मचारियों के वेतन, पेशन और प्रशिक्षण पर अंग्रेजों द्वारा नियोजित व्यय करने के कारण भारत पर डाला जाने लगा। यदि इस धन को भारत में निवेश किया जाता तो देश की अर्थव्यवस्था में काफी सुधार आ सकता था। अंग्रेजों द्वारा लागू आर्थिक नीतियों ने भारतीय समाज की सामाजिक संरचना बदल दी।

5.3.4 धन उधार देने वाले नए वर्ग का उदय

राजस्व की समयावधि और अत्यधिक मांग ने किसानों का साहूकारों से ऋण लेने के लिए मजबूर किया। ये साहूकार अक्सर उच्च ब्याज लेकर किसानों का शोषण करते थे। अक्सर लेखांकन में जाली हस्ताक्षर और अंगूठे के छापों आदि अनुचित साधनों का प्रयोग करते थे। अंग्रेजों की नई काकनून प्रणाली और नीति केवल साहूकारों या स्थानीय व्यापारियों या जमींदारों की सहायता करती थी। ज्यादातार मामलों में किसान पूर्ण ब्याज के साथ ऋण का भुगतान करने में विफल रहते थे। इस प्रकार धीरे-धीरे पैसा उधार देने वालों के हाथ से उनकी भूमि चली गई।

5.3.5 नये मध्य वर्ग का उदय

भारत में ब्रिट्रिश शासन का एक प्रमुख प्रभाव यह पड़ा कि एक नए मध्यम वर्ग का उदय हुआ। ब्रिट्रिश व्यावसायिक हितों की वृद्धि के साथ कुछ भारतीय लोगों को काम के छोटे-छोटे नए अवसर मिले। उन्होंने ज्यादातर एजेंटों और मध्यस्थों के रूप में ब्रिट्रिश व्यापारियों के लिए काम किया और बहुत धन कमाया। एक नया अभिजात वर्ग जो स्थायी बंदोबस्त की शुरूआत के बाद अस्तित्व में आया उसने भी अपन एक नया वर्ग बना लिया, पुराने जमींदारों ने अपनी भूमि पर स्वामित्व खो दिया और उनकी भूमि को कई मामलों में जमीन मालिकों के एक नये वर्ग के द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया। इन लोगों में से कुछ ने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की और उनका एक नया अभिजात वर्ग बन गया। ब्रिट्रिश सत्ता के प्रसार के साथ रोजगार के नये अवसर आए। भारतीय समाज

में नयी कानूनी अदालतो, सरकारी अधिकारी और वाणिज्यिक एजेंसियों की शुरूआत हुई। अंग्रेजी शिक्षित लोगों को स्वाभाविक रूप से अपनी उपनिवेशिक शासकों से आवश्यक संरक्षण मिला। इस प्रकार अंग्रेजों ने भूस्वामियों के अलावा एक नया पेशेवर और सेवा करने वाला मध्यम वर्ग भी बनाया।

5.3.6 परिवहन और संचार

उस समय भारत में परिवहन का साधन बैलगाड़ी, ऊँट, और पीठ पर सामान ढोने वाले अन्य जानवर ही थे। दूसरी तरफ इंगलैण्ड को रेलवे की जरूरत थी जो निर्यात बंदरगाहों के साथ उत्पादक क्षेत्रों को जोड़ सके और ब्रिट्रिश सामान को देश के विभिनन भागों तक पहुँचा सके। आज आप जो विशाल रेलवे का नेटवर्क देख रहे हैं वेा अंग्रेजों द्वारा बनाया गया है। ब्रिट्रिश बैकरों और निवेशकों ने अपनी पूंजी रेलवे के निर्माण में लगाई। ब्रिट्रिश पूंजीपतियों को दो महत्वपूर्ण तरीके से लाभ हुआ। पहला व्यापार की वस्तुओं में, व्यापार करना बहुत आसान हो गया और बंदरगाहों के साथ आंतरिक बाजार को जोड़ना भी लाभदायक रहा। दूसरे, रेल इंजन, डिब्बे और रेल लाईनों के निर्माण के लिए पूंजी ब्रिटेन से आयी। ब्रिटेन पूंजीपतियों को रेलवे में निवेश से सरकार द्वारा 5 प्रतिशत की न्यूनतम लाभ की गारण्टी मिली। इन कंपनियों को 90 साल के पट्टे के साथ भूमि दी गई।

हालांकि रेलवे ब्रिट्रिश व्यापार के लाभ के लिए बनाई गई थी परन्तु रेलवे ने देश को राष्ट्रीय जागरण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि ब्रिट्रिश ने कभी सोचा नहीं था कि व्यापक परिवहन नेटवर्क और बेहतर शिक्षा लोगों और विचारों को आपस में जोड़ेगी।

ब्रिट्रिश शासन के दौरान भारत ने स्वतंत्रता के विचारों, समानता, मानव अधिकार, विज्ञान और तकनीकी पश्चिम से लिया। आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में तेजी हुई। अब हम आधुनिक विचार के भारतीय समाज पर प्रभाव के बारे में पढ़ेंगे।

क्या आप जानते हैं

सबसे पहली रेलवे लाईन रेड हिल में रेल रोड लाईन मद्रास में थी। इसे 1837 में ग्रेनाइट पत्थर को ले जाने के लिए खोला गया। जबकि 1853 में बम्बई से ठाणे के लिए यात्री सवारी गाड़ी इसी वर्ष में डलहौजी ने भारत में कलकत्ता से आगरा के लिए तार लाईन तथा डाक सेवा आरम्भ की।

पाठगत प्रश्न 5.2

1. सही या गलत बताए और अपनी राय को साबित करें :

   (क) विदेशी माल का ड्यूटी मुक्त प्रवेश, भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा था।

   .....

(ख) अंग्रेजों को सभी भूमि बंदोबस्तों से लाभ मिला।

.....

(ग) नील, चावल, गेहूँ, चाय और अफीम पांच प्रमुख वाणिज्यिक फसलें थी जो अंग्रेजों ने शुरू की।

.....

(घ) धन-उधार देने वालों का एक नया वर्ग बन गया था।

.....

2. अंग्रेजों द्वारा रेवले के एक व्यापक नेटवर्क का भारत में किन दो कारणों से निर्माण किया गया।

5.4 समाज और संस्कृति पर ब्रिटिश प्रभाव

भारत में अंग्रेजों के आने से समाज में कई परिवर्तन हुए। 19वीं सदी में शिशु हत्या, बाल-विवाह, सती, बहु-विवाह जैसी सामाजिक कुप्रथाओं और कठोर जाति व्यवस्था प्रचलित थी। ये प्रथाएँ मानव की गरिमा और मूल्यों के विरूद्ध थी। जीवन के सभी स्तरों पर महिलाओं से भेदभाव किया जाता था और वे समाज का वंचित वर्ग मानी जाती थी। उनकी अपनी स्थिति में कोई सुधार के अवसर नहीं दिए गए थे। ऊँची जातियों के ब्राह्मण पुरूषों तक ही शिक्षा सीमित रह गई थी। ब्राह्मण वेदों का उपयोग करते थे जो संस्कृत में लिखे गये थे। पुरोहित महंगे अनुष्ठान बलिदान और जन्म या मृत्यु के बाद की रीतियों को करवाते रहते थे।

जब ब्रिट्रिश भारत आए तो वे स्वतंत्रता, समानता आजादी और मानव अधिकार जैसे विचार के रूप में नए विचार यूरोप के पुनर्जागरण, सुधार आंदोलनों और विभिन्न क्रांतियों से यहां लाए। इन विचारों ने हमारे समाज के कुछ वर्गों के लोगों से कुछ करने के लिए अपील की और देश के विभिन्न भागों में कई सुधार आंदोलनों का नेतृत्व किया। इन ओदोलनों में सबसे आगे दूरदर्शी भारतीयों में राजाराम मोहनराय, सर सैयद अहमद खान, अरूणा आसफ अली और पंडिता रमबाई थे इन आंदोलनों से सामाजिक एकता आई और स्वतंत्रता, समानता की दिशा में प्रयास किए। कई कानूनी उपाय महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए शुरू किए गए। उदाहरण के लिए लार्ड बैंटिक ने 1829 में सती प्रथा पर प्रतिबंध लगाया। गवर्नर जनरल ने 1856 में विधवा पुनर्विवाह कानून पारित किया गया। एक कानून 1872 में पारित किया जिसमें अंतर-जाति और अंतर-साम्प्रदायिक विवाह को सहमति दी। 1929 में शारदा अधिनियम को पास करके बाल-विवाह पर रोक लगायी। एक अधिनियम पारित किया गया कि 14 वर्ष से नीचे आयु की लड़की और 18 वर्ष से कम आयु के लड़के की शादी अवैध मानी जाएगी। सभी आंदोलनों ने जाति व्यवस्था और विशेष रूप से अस्पृश्यता की प्रथा की आलोचना की।

समाज सुधारकों के इन प्रयासों का प्रभाव समाज सुधार और धार्मिक संगठनों में तथा राष्ट्रीय आंदोलन में स्पष्ट देखा जा सकता है। महिलाओं को बेहतर शिक्षा, व्यवसाय और सार्वजनिक

रोजगार के अवसर भी मिलने लगे थे। इंडियन नेशनल आर्मी (आईएनए) की कैप्टन लक्ष्मी सहगल, सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, अरूणा आसफ अली और कई अन्य महिलाओं की स्वतंत्रता संगाम में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका रही।

चित्र 5.7 कैप्टन लक्ष्मी सहगल माध्यम, सामने पंक्ति में) और अन्य आईएनए अधिकारी नेताजी सुभाष चंद्र बोस (बांए, आगे की पंक्ति में)

5.4.1 सामाजिक और सांस्कृतिक नीति

ब्रिट्रिश विशाल लाभ कमाने की नीयम से भारत आये थे। इसका अर्थ है कि बहुत सस्ती दरों पर कच्चे माल को खरीद कर और तैयार माल की बिक्री अधिक कीमतों पर करके लाभ कमाना। ब्रिट्रिश भारतीयों को शिक्षित और अपनी वस्तुओं के उपभोग के लिए पर्याप्त आधुनिक बनाना चाहते थे। एक सीमा तक कि वे ब्रिट्रिश हितों के लिए हानिकारक साबित नहीं हों कुछ अंग्रेजों का मानना था कि पश्चिमी विचार आधुनिक और बेहतर थे, जबकि भारतीय विचार पुराने और निम्नतर थे। वास्तव में यह सच नहीं है। भारत के पास पारम्परिक ज्ञान था जो आज भी प्रासांगिक है। इस समय इंग्लैण्ड में रेडिकल्स का एक समूह था जो भारतीयों की दिशा में एक मानवतावादी विचारधारा रखते थे। वे चाहते थे कि भारत आधुनिक विज्ञान की प्रगतिशील दुनिया का एक भाग बने। लेकिन ब्रिट्रिश सरकार भारत को तेजी से आधुनिकीकरण के प्रति से सतर्क हो गई। अंग्रेजों ने यह जान लिया था कि अगर धार्मिक विश्वासों और सामाजिक रिवाजों में ज्यादा हस्तक्षेप किया गया तो लोग प्रतिक्रिया करेंगे। वे भारत में अपने शासन को स्थायी बनाना चाहते थे और लोगों के बीच कोई भी प्रतिक्रिया नहीं चाहते थे। इसलिए यद्यपि अंग्रेज सुधारों की बात करते थे, पर वास्तव में उन्होंने आधे-अधूरे मन से कुछ कदम उठाए।

5.4.2 शिक्षा नीति

ब्रिट्रिश ने भारत में अंग्रेजी भाषा शुरू करने में गहरी रूचि ली। ऐसा करने के लिए उनके पास कई कारण थे। अंग्रेजी भाषा में भारतीयों को शिक्षित करना उनकी रणनीति का एक हिस्सा था। भारतीयों को क्लर्क के रूप में कम मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार किया गया जबकि उसी काम के लिए ब्रिट्रिश बहुत अधिक वेतन की मांग करते थे। इससे प्रशासन पर व्यय का भार कम पड़ा। उन्होंने भारतीयों का एक ऐसा वर्ग बनाया जो उनके प्रति वफादार थे और दूसरे भारतीयों से सम्बन्ध नहीं रखते थे। इस वर्ग के भारतीयों को ब्रिट्रिश विचारधारा और संस्कृति की प्रशंसा करना सिखाया। इसके अलावा, वे ब्रिट्रिश माल के लिए बाजार को बढ़ाने में मदद करेंगे। उन्होंने देश में रजनीतिक अधिकार को मजबूत बनाने के लिए शिक्षा का उपयोग एक साधन के रूप में किया। ऐसा मान लिया है कि कुछ शिक्षित भारतीय जनता में अंग्रेजी संस्कृति फैलाकर और वे शिक्षित भारतीयों के इस वर्ग के माध्यम से शासन करने में सक्षम होंगे। ब्रिट्रिश केवल उन भारतीयों को नौकरियां देते थे जो अंग्रेजी जानते थे और वे भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा के लिए मजबूर करते थे। इससे शिक्षा जल्द ही अमीरों तथा शहरों में रहने वालों का एकाधिकार बन गयी।

ब्रिट्रिश संसद ने 1813 में चार्टर अधिनियम जारी किया गया जिसके द्वारा कि भारत में पश्चिमी विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए एक लाख रुपये की राशि खर्च की जाएगी। लेकिन जल्द ही विवाद हो गया कुछ लोग केवल पश्चिमी विचारों की वकालत पर खर्च चाहते थे। वहां दूसरों ने परंपरागत भारतीय शिक्षा पर अधिक जोर दिया। कुछ लोगों ने शिक्षा के माध्यम के रूप में (क्षेत्रीय भाषाओं) का उपयोग करने की सिफारिश की, जबकि दूसरे अंग्रेजी के पक्ष में थे। इस भ्रम में लोग अंग्रेजी को एक माध्यम और अध्ययन के लिए एक विषय के रूप में अलग समझने में विफल रहे। पश्चिमी विचारों और साहित्य का शिक्षण केवल अंग्रेजी भाषा के माध्यम से करवाने का निर्णय लिया गया। इस दिशा में बुड्स डिस्पैच 1854 ने अन्य निर्देश जारी किये। इसने भारत सरकार से कहा कि जनता की शिक्षा के लिए उसको जिम्मेदारी लेनी होगी। वुड्स डिस्पैच के निर्देश के कारण कलकत्ता, मद्रास और बंबई में 1857 में विश्वविद्यालय और सभी प्रांतों में शिक्षा विभाग स्थापित किए गए। प्राथमिक विद्यालयों की बजाय कुछ अंग्रेजी स्कूलों और कॉलेजों को खोला गया। उन्होंने आम जनता की शिक्षा पर ध्यान नहीं दिया। लेकिन वास्तविकता में, यह सब भारतीय लोगों की जरूरतों को पूरा करने के लिए पर्याप्त नहीं था।

हालांकि अंग्रजों को आधे-अधूरे मन से भारत में शिक्षा नीति, अंग्रेजी भाषा का पालन और पश्चिमी विचारों को मानना पड़ा जिसका समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। कई सुधारक जैसे राजा राम मोहन राय, ईश्वर चन्द विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, सर सैयद अहमद खान और स्वामी विवेकानंद ने उदारवाद और लोकतंत्र के पश्चिमी विचारों को माना तथा उस समय के गैर-मानवी सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं को सुधारने का प्रयत्न किया। हालांकि शिक्षा आम जनता तक नहीं पहुंची लेकिन साम्राज्यवाद विरोधी, राष्ट्रवाद, सामाजिक और आर्थिक समानता के विचारों ने अपनी जड़े राजनैतिक दलों, वाद-विवाद सार्वजनिक मंच और प्रेस के माध्यम से लोंगों में जमा ली। अंग्रेजी भाषा और पश्चिमी शिक्षा के प्रसार ने भारतीयों को आधुनिक तर्कसंगत, लोकतांत्रिक, उदार और देशभक्ति के दृष्टिकोण को अपनाने में सहायता की। उन्होंने ज्ञान के नए क्षेत्र जैसे

विज्ञान, मानविकी और साहित्यिक को अपनाया। भारत में शिक्षित लोगों की अंग्रेजी भाषा (लिंगुआ फ्रांका) प्रिय भाषा बन गई। इससे भारतीयों को इंग्लैंड में अध्ययन का अवसर मिला और वहां लोगों ने लोकतांत्रिक संस्थाओं की कार्यप्रणाली को पढ़ा। वहां भारतीयों ने जॉन लोके, रसिक्न मिल, रूसो और कई दूसरे अनेक लेखकों के स्वतंत्रता, समानता, भाईचारा, मानवअधिकार और स्वशासन के विचारों को पढ़ा। फ्रांसीसी और अमेरिकी क्रांतियों और इटली और जर्मनी के एकीकरण से अपने को मजबूत बनाया और विचारों की प्रशंसा की। उन्हें केवर, गैरीबन्दी और माजीनी पसन्द आए। वे सब भारत के लिए इन आदर्शो से प्रेरणा लेने लगे।

मैक्स म्यूलर और एनी बेसेंट जैसे पश्चिमी विचारकों ने विरासत और संस्कृति में गर्व की भावना को बढ़ाने के लिए भारतीय जन-भाषा और साहित्यिक के लिए प्रोत्साहित किया। यह भारतीयों को भारत के सांस्कृतिक अतीत को पुनर्जीवित करने के लिए योग्य बनाना चाहते थे। इसके अतिरिक्त विचारों में राजनीति जागृति और विचारों के आदान-प्रदान करने में प्रेस की महत्वपूर्ण भूमिका उल्लेखनीय है। समाचार पत्र तथा पत्रिकाओं ने लोगों को अपने विचारों और समस्याओं को कहने का अवसर दिया। इसी तरह उपन्यास, नाटक, लघु कहानी, कविता, गीत, नृत्य, थिएटर, कला और सिनेमा आदि को औपनिवेशिक शासन के प्रति विरोध व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया गया। ये लोगों की भाषा में उनके दैनिक जीवन के सुख और दुख का वर्णन करते थे। समाचार पत्र और पत्रिकाओं के साथ-साथ वे आत्मविश्वास, आत्म सम्मान, जागरूकता और देशभक्ति की भावनाओं को बढ़ावा दे रहे थे। जिससे राष्ट्रीय चेतना की एक भावना विकसित हुई।

? क्या आप जानते हैं

इंडियन पीपुल्स थिएटर एसोसिएशन (इप्टा) 1943 में स्थापित किया गया। इसने संगीत को एक अभिन्न हथियार की रतह असहमति और प्रतिरोध व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया। इसमें शोषण के प्रति जागरूकता से लेकर, किसानों के अनवरत बलिदान 1857 के विद्रोह और अमृतसर में जलियावाला बाग में मारे गए लोगों के लिए गाने गाये गए। युद्ध और हिसा की अर्थहीनता भारत के विभाजन के खिलाफ विरोध को अपनी गीतों के माध्यम से गाकर बताया।

ब्रिट्रिश ने कई रणनीतियाँ अपने नियम को प्रभावी करने के लिए बनाई। आरम्भिक समय में, भारत में वारेन हेस्टिंग्स, विलियम जोन्स, जोनाथन डंकन आदि जैसे ब्रिट्रिश प्रशासकों ने भारत के प्राचीन अतीत की महिमा को जाना। इन विद्वानों और प्रशासकों को एशिया की भाषा का ज्ञानी कहा गया। उन्होंने सोचा कि भारतीय भाषाओं साहित्य और संस्कृति का ज्ञान उन्हें भारत के शासन को आसानी से चलाने में मदद देगा। महत्वपूर्ण संस्थान जो उनके प्रयासों से पहचान में आए थे वॉरने हेस्टिंस (1781) द्वारा कलकत्ता में मदरसे की स्थापना की, बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना विलियम जोन्स ने (1784) में की बनारस में संस्कृत कॉलेज की स्थापना जोनाथन डंकन (1794) में की और फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना (1800) में की। विशेश रूप से एशियाटिक सोसाइटी और फोर्ट विलियम कालेज भारतीय संस्कृति, भाषा और साहित्य अध्ययन का मुख्य केन्द्र बन गया। पहली बार प्राचीन संस्कृत के कालिदास जैसे लेखकों की महान कृति का अनुवाद अंग्रेजी के माध्यम से विश्व में जाना गया।

क्रियाकलाप 5.3

इस अवधि के दौरान कुछ व्यक्तियों ने भारतीय संस्कृति, ज्ञान और परम्परा की महिमा को उजागर करने में भूमिका निभाई थी। कुछ व्यक्तियों को नीचे सूचीबद्ध किया गया है उनका योगदान संसार में जाना जाता है। उनके विषय में अधिक जानकारी के लिए पुस्तकालय/इंटरनेट पर खोज करें।

1. आर्यभट्ट .....
2. चरक .....
3. मैत्रेयी .....
4. गार्गी .....

आप कैसे सोचते हो कि भारतीयों को अपने अतीत के इतिहास पर गर्व करने के लिए और आत्म सम्मान पाने में यह सहायता करता है।

5.4.3 सुधार आंदोलन के प्रभाव

सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलनों ने राष्ट्रीय आंदोलन किस प्रकार नेतृत्व किया? सुधारकों की लगातार प्रयासों से समाज पर भारी प्रभाव पड़ा। धार्मिक सुधार आंदोलनों ने भारतीयों के मन में अधिक से अधिक आत्मविश्वास एवं आत्मसम्मान और अपने देश के लिए गर्व की भावना डाली। इन सुधार आंदोलनों से अनेक भारतीय ने महसूस किया है कि आधुनिक विचारों और संस्कृति का भारतीय सांस्कृतिक धारा में समेकित करके आत्मसात किया जा सकता है उन्होंने देशवासियों को बताया कि सभी आधुनिक विचार भारतीय संस्कृति और मूल्यों के विरूद्ध नहीं है। आधुनिक शिक्षा की शुरूआत ने भारतीयों को जीवन के लिए एक वैज्ञानिक और तर्कसंगत दृष्टिकोण दिया। लोगों को भारतीयों के रूप में अपनी पहचान के लिए और अधिक जागरूक किया। जो अंततः भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में ब्रिटेन के खिलाफ एकजुट संघर्ष के लिए जिम्मेदार था।

5.4.4 ब्रिटिश प्रशासन और न्यायिक प्रणाली

भारतीयों को ब्रिट्रिश प्रशासन की नई प्रणाली को समायोजित करने में कठिनाई हुई। भारतीय राजनीतिक अधिकारों से वंचित थे और ब्रिट्रिश अधिकारी उन से अवमानना के साथ व्यवहार करते थे। भारतीयों को प्रशासनिक और सैन्य सभी उच्च पदों से बाहर रखा गया। अंग्रेजों ने भारत में कानून और न्याय की एक नई प्रणाल की शुरूआत की। एक श्रेणीबद्ध सिविल और आपराधिक अदालतों को स्थापित किया गया। कानूनों के कोड बनाए गये तथा कार्यपालिका से न्यायपालिका को अलग करने का प्रयास किया गया। भारत में कानून के शासन को स्थापित1करने के प्रयास किए गए। लेकिन ब्रिट्रिश भारतीयों के अधिकारों और स्वतंत्रता के साथ हस्तक्षेप कर रहे थे तथा अपनी निर्णायक शक्तियों का आनन्द ले रहे थे। कानूनी आदालतें भी आम लोगों के लिए सुलभ नहीं थी। न्याय एक महंगा मामला बन गया। नई न्यायाधिक प्रणाली भी यूरोपियन तथा भारतीयों के बीच भेदभाव रखती थी।

पाठगत प्रश्न 5.3

1. निम्नलिखित को मिलाएँ

(क) विधवा पुनर्विवाह अधिनियम	(1) अधिनियम 1857
(ख) चार्टर अधिनियम	(2) अधिनियम 1794
(ग) शिक्षा विभाग	(3) 1813
(घ) बनारस का संस्कृति कॉलेज	(4) 1856
	(5) 1855

2. अंग्रेजों द्वारा स्थापित भारतीय संस्कृति तथा भाषा के कम से कम दो केन्द्रों के नाम बताएँ?
3. ब्रिट्रिश भारत में महिलाओं की स्थिति सुधारने में मदद करने वाले दो कानूनी उपायों को संक्षेप में लिखे?

5.5 विरोध आंदोलन

ब्रिट्रिश शासन के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों पर प्रतिकूल प्रभाव के परिणामस्वरूप विदेशियों के खिलाफ भारतीय लोगों की कड़ी प्रतिक्रिया हुई। देश भर में ब्रिट्रिश विरोधी आंदोलनों की श्रृंखला का नेतृत्व किया जाने लगा। इसके लिए किसानों और जनजातियों ने शोषक शासकों के खिलाफ विद्रोह किया। इसका अधिक से अधिक विस्तार में आप आगे के पाठों में पढ़ेंगे। ब्रिट्रिश शासन के दौरान भारत में अनेक बार अकाल पड़ा जो अभूतपूर्व था। 19वीं सदी के मध्य के दौरान 7 बड़े अकाल दर्ज किये गए जिसमें 15 लाख लोगों की मौत हुई। इस प्रकार 19वीं सदी के उत्तरार्ध में 24 अकाल पड़े जिसमें 200 लाख से अधिक मौतें हुई। सबसे विनाशकारी 1943 में बंगाल का अकाल था जिसने 40 लाख भारतीयों को मार डाला। करों से दबे किसान भूमि से बेदखल और बंगाल के अकाल से बचे लोग विद्रोही संन्यासियों और फकीरों के समूहों में शामिल हो गए। 1783 में विद्रोहियों ने कंपनी के राजस्व का भुगतान बन्द कर दिया। हालांकि विद्रोहियों को अंत में आत्मसमर्पण करने के लिए मजबूर किया गया। इसी तरह तमिलनाडु, मालाबार और तटीय आंध्र के पोलीगर और मालाबार के मैपिला लोगों ने औपनिवेशिक ने शासन के विरूद्ध विद्रोह किया। उत्तर भारत में 1824 में पश्चिमी उत्तर प्रदेश और हरियाणा के जाटों ने विद्रोह किया। महाराष्ट्र और गुजरात में कोलियों ने विद्रोह किया।

देश के विभिन्न भागों में आदिवासी जनजातियों ने अपने अधिकार के विस्तार के लिए औपनिवेशिक सरकार का विद्रोह किया। जनजातियों से विभिन्न वसूलियां की जाती थी। जनजातियों जैसे खानदेश के भील और सिंहभम के कोली नेताओं ने अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह किया। हालांकि अंग्रेजों ने उन्हें बेरहमी से दबा दिया। बंगाल की सीमा, बिहार और उड़ीसा के अत्याचार पीड़ित संथालों ने भी अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह किया क्योंकि उनको अपनी भूमि से बेदखल किया जा रहा था। उन्होंने अपनी सरकार की स्थापना की लेकिन अंग्रेजों ने उनके विद्रोह को समाप्त कर दिया। हालांकि इन विद्रोहियों को सफलता नहीं मिली लेकिन वे औपनिवेशिक शासन

के अलोकप्रिय चरित्र को उजागर करने में सफल रहे। आज भी हम अपने समाज में कई असमानताओं को देखते है। यदि आप इस स्थिति की आजादी के समय के साथ तुलना करें तो हमने अच्छी प्रगति की है। लेकिन हमें अभी एक लंबा रास्ता तय करना है।

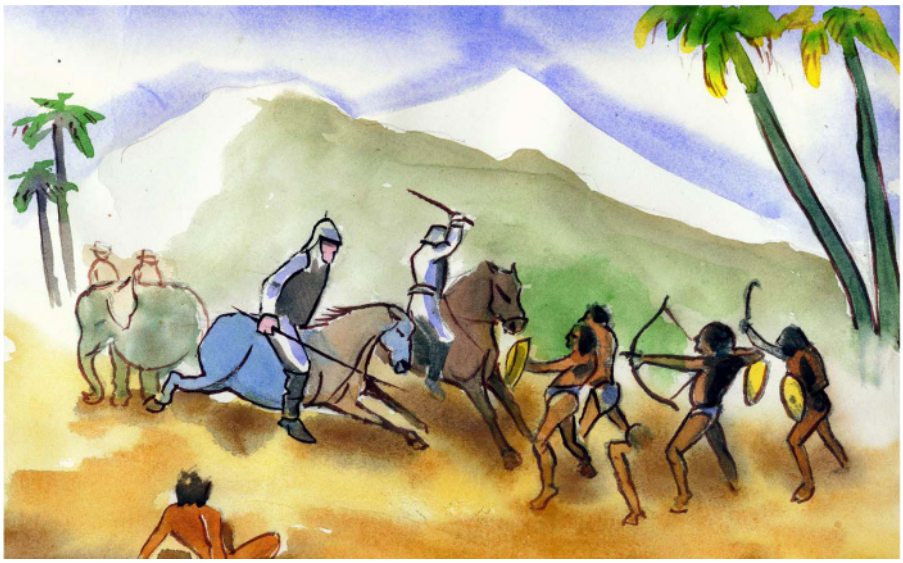

चित्र 5.8 संथाल विद्रोहः रेलवे इंजीनियरों और संथालों के बीच लड़ाई

क्रियाकलाप 5.4

विशेषज्ञों के विश्लेषण के अनुसार 17,500 से अधिक किसानों ने 2002 और 2006 बीच आत्म हत्या की।महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, गुजरात, केरल, पंजाब, छत्तीसगढ़ और तमिलनाडु में किसानों की आत्महत्या की सूचना मिली है। इनकी आत्महत्या का मुख्य कारण फसल विफलता और ऋण था। इसके अलावा, किसानों की संख्या भी कम हो रही है, उनके खेती का परित्याग करने के कारण अखबारो, पत्रिकाओं और इंटरनेट या 5-6 किसानों से बात करके इकट्ठा करके और यह पता करें कि किन संभावित कारणों से वे यह कदम उठा रहे हैं? आप अपने विचार प्रस्तुत करें।

क्या आपने फिल्म "पीपली लाइव" देखी है? यदि आप देख सकते हैं तो देखें।

5.5.1 1857के विद्रोह के प्रभाव

किसानों एवं कारीगरों की आर्थिक गिरावट 1770 से 1857 तक के 12 प्रमुख अकालों तथा कई छोटे अकालों से स्पष्ट है। यह सभी कारक ब्रिट्रिश विरोधी भावना सहायक सिद्ध हुए। अंग्रजों ने बेरहमी से शासन किया और वे जनता की भावनाओं के प्रति संवेदनशील नहीं थे। सुधारों

के द्वारा कुछ सामाजिक परिवर्तन किए गए लोगों का मानना था कि सरकार उन्हें इसाई धर्म में परिवर्तित करना चाहती थी। परिणाम स्वरूप भारत में अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के खिलाफ एक बड़ी संख्या में विद्रोह हुए। आगे के पाठ में आप कुछ महत्वपूर्ण और लोकप्रिय विद्रोहों के बारे में पढ़ेगे। उनके महत्व तथा प्रकृति के विषय में पढ़ेगे। तुम 1857 के विद्रोह के बारे में जिसका हमारे राष्ट्रीय आंदोलन पर एक गहरा प्रभाव पड़ा। इसमें पहली बार एकीकृत हुए विभिन्न धार्मिक और जातीय पृष्ठभूमि वाले वर्ग के लोगों को ब्रिट्रिश शासन के खिलाफ एक साथ लाया गया।

विद्राह ने ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन का भारतीय राज्यों के प्रति ब्रिट्रिश नीति में परिवर्तन के साथ अन्त कर दिया। विद्रोह का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम था कि इससे राष्ट्रवाद का जन्म हुआ। भारतीय लोगों में अपने नेताओं के प्रति जागरूकता आ गई। जो देश के लिए अपने जीवन का बलिदान कर रहे थे ताकि आगामी समय में दूसरे लोग स्वतंत्र भारत में रह सके। इस विद्रोह के बाद अंग्रेजों ने फूट डालो और राज करो नीति से हिन्दुओं और मुसलामानों के बीच संबंध को खराब किया। उन्होंने महसूस किया कि यदि वे भारत में अपने शासन को जारी रखना चाहते हैं तो उन्हें हिन्दू और मुसलमानों को अलग करना आवश्यक है।

5.5.2 आज पर प्रभाव

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप जान जायेंगे कि ब्रिट्रिश शासन ने किस प्रकार भारतीय जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया। अंग्रेजों के राजनीतिक और व्यापारिक हितों को मजबूत बनाने के लिए कुछ परिवर्तन जानबूझकर प्रस्तुत किए गए। लेकिन भारतीय और पश्चिमी संस्कृतियों के बीच बातचीत का प्रतिफल एक दूसरे रूप में भी हुआ। एक बड़ी संख्या में ब्रिट्रिश और यूरोपीय इस दौरान हमारे देश में रह गए जिससे सांस्कृतिक परिवर्तन हुआ।

हमें यह भी समझना चाहिए कि हमारे वर्तमान जीवन को काफी हद तक तत्काल अतीत से आकार मिलता है। इस तत्काल अतीत में देश के एक बड़े हिस्से पर ब्रिट्रिश नियंत्रण एक निर्धारण कारक बन गया। ब्रिट्रिश शासन के एक परिणाम के रूप में सांस्कृतिक और कानूनी परिवर्तन आज भी हमारे जीवन को प्रभावित करते हैं। रेल, क्लब जीवन, राष्ट्रपतिभवन जैसे शाही भवन और संसद भवन भारत में ब्रिट्रिश शासन की याद ताजा कराते है। कई खाद्य पदार्थ जैसे ब्रेड, चाय और केक जो हम आज भी खाते हैं यह सब यूरोपीय लोगों के साथ रहने का परिणाम है। यदि आप अपने आप को चारों ओर देखेंगे तो आश्चर्य चकित हो जाएंगे कि शहरी भारत में प्रचलित वेशभूषा का बड़ी संख्या में ब्रिट्रिश शासन के दौरान अपनाया गया था। उदाहरण के लिए पतलून, कोट और टाई। इस अवधि के दौरान भारतीय सिविल सेवा शुरू की गई। भारतीय सशस्त्र बलों ने अभी भी यूरोपीय प्रशिक्षण और संस्कृति के कई पहलुओं को बनाए रखा है। हमारी शिक्षा या सीखने का माध्यम भी मुख्य रूप से अंग्रेजी है। सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट अपने निर्णय अंग्रेजी में पारित करते हैं। यह भाषा भी ब्रिट्रिश शासन की विरासत है और भारतीयों को अपने देश में रोजगार की मांग की लोकभाषा बनी हुई है।

पाठगत प्रश्न 5.4

1. भारत में किसान और आदिवासी समूहों द्वारा विरोध आंदोलनों के दो कारणों को चिन्हित करेा।

2. ''फूट डालो और राज करो'' ब्रिट्रिश नीति ने देश के राष्ट्रीय हितों को कैसे प्रभावित किया? 30 शब्दों में समझाओ।

आपने क्या सीखा

- अंग्रेज व्यापारियों के रूप में भारत आए थे लेकिन क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं के साथ धीरे-धीरे पूरे भारत पर समायोजन और कूटनीति जैसे विभिन्न साधनों का उपयोग करके विजय प्राप्त कर उन्होंने भारत पर नियंत्रण कर लिया।

- भारत में ब्रिट्रिश राजनीतिक प्रभुत्व का कारण 1857 की प्लासी की लड़ाई मानी जाती है। ब्रिट्रिश शासन का भारतीयों के राजनीतिक और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा।

- ब्रिट्रिश शासन के आर्थिक प्रभाव सबसे अधिक दूरगामी था। इसने भारत की परंपरागत अर्थव्यवस्था नष्ट की और भारत के पैसों को ब्रिटेन भेजा। ब्रिट्रिश आर्थिक नीतियों का किसानों, कारीगरों पर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।

- ब्रिट्रिश राज से असन्तोष के परिणामस्वरूप अंग्रेजों के खिलाफ प्रतिरोध आंदोलनों की एक श्रृंखला का जन्म हुआ। सनयासी और फकीरों की बगावतें, फराजी आंदोलनों बाहबी आंदोलन और संथाल विद्रोह ब्रिट्रिश शासन के प्रति विरोध का उदाहरण है।

- सैन्य और राजनीतिक कमजोरियों के कारण भारतीयों की 1857 के युद्ध में हार हुई?

पाठान्त प्रश्न

1. अंग्रेजी की भू-राजस्व नीतियों ने किसानों के जीवन को कैसे प्रभावित किया।
2. स्थायी बंदोबस्त और महालवारी बंदोबस्त के बीच भेद बताएं?
3. अंग्रेजी शिक्षा ने भारत में राष्ट्रवाद की वृद्धि में कैसे योगदान दिया?
4. देश में अंग्रेजी भाषा की सफलता के लिए कारणों की जांच करें?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1

1. (क) (iv)
   (ख) (iii)
2. ब्रिटेन के उद्योगों के लिए कच्चा माल तथा अपने तैयार माल के लिए बाजार को बढ़ाना।
3. विलय की नीति और सहायक संधि

5.2

1. (क) नहीं, क्योंकि विदेशी माल भारतीय हथकरघा उद्योग के लिए एक खतरा था। इसके अलावा भारतीय बुनकरों को बहुत ज्यादा नुकसान भी उठाना पड़ा।
   (ख) नहीं, क्योंकि ब्रिट्रिश शासन द्वारा उच्च राजस्व दरों के खिलाफ किसानों ने विद्रोह किया। हालांकि ब्रिट्रिश साम्राज्य की आर्थिक रूप से लाभ हुआ परंतु यह करने से आगे चल कर उन्हें राजनीतिक नुकसान पहुंचा।
   (ग) नहीं है क्योंकि चावल और गेहं खाद्य फसलें हैं।
   (घ) हाँ, क्योंकि जब किसान को अपना ऋण वापिस करने में विफल रहते तो साहूंकार वर्ग के हाथों अपनी भूमि खो देते।
2. उनका मुख्य उद्देश्य गांवों से व्यापार बन्दरगाहों और औद्योगिक शहरों को जोड़ना था जहां वे अपने कच्चे माल जो नकदी फसल हैं। आसानी और तेजी से व्यापार बन्दरगाहों तक ले जा सकते थे। ऐसा परिवहन व्यवस्था ने सुनिश्चित किया।

5.3

1. (क) (iv) (ख) (iii) (ग) (i) (घ) (ii)
2. बंगाल की एशियाटिक सोसाइटी 1784 में विलियम जोन्स द्वारा स्थापित की गई
   लार्ड वैलसली ने 1800 में फोर्ट विलियम कालेज की स्थापना की।
3. सती प्रथा जिसमें पत्नी अपने पति की चिता के आग में कूद जाती थी। इस पर 1829 में प्रतिबंध लगा दिया गया।
   शारदा अधिनियम 14 वर्ष से कम आयु की लड़की और 18 वर्ष से कम आयु के लड़के के बाल विवाह को रोकने के लिए 1929में पारित किया गया।

5.4

1. (क) अंग्रेजों की शोषक नीति, भारी कराधान तथा किसानों पर उंचे राजस्व की दर।
   (ख) विभिन्न जबरन वसूली की नीतियों और आदिवासी भूमि पर ब्रिट्रिश अधिकार का विस्तार।
2. ''फूट डालो और राज करो'' ब्रिट्रिश नीति देश को धार्मिक आधार पर विभाजन का कारण बनी। इस नीति के द्वारा अंग्रेजों ने हिन्दु मुसलमानों के सम्बन्ध खराब करके अपने शासन को कायम रखा।